भया कबीर उदास- अपूर्णत्व से पूर्णत्व का सफर

***डॉ. एमेकर नामदेव जी.**

'भया कबीर उदास' यह उषा प्रियंवदा का पाँचवा उपन्यास है। यह सन 2007 में प्रकाशित हुआ। उषा प्रियंवदा सूक्ष्म स्त्री मनोभावों को व्यक्त करनेवाली महिला कथाकार है। अभी तक उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी जीवन की सूक्ष्म–अतिसूक्ष्म यथार्थ संवेदनाओं को प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत उपन्यास केवल नारी संवेदनाओं की यथार्थ अभिव्यक्ति नहीं है, अपितु मानवीय जीवन के अपुर्णत्व की समस्या का सकारात्मक प्रस्तुतीकरण है। इस उपन्यास की भाव संवेदनाओं से हर कोई व्यक्ति गुजरता है। इसी संवेदन यात्रा का यथार्थ अंकन तथा मानवी जीवन की पुर्णता को स्थापित करने का यह प्रयास है।

प्रस्तुत उपन्यास की कथा एक उच्च–शिक्षित भारतीय स्त्री की है, जो अपने परिवार को छोडकर अमरिका जैसे प्रगत देश में रहती है। यह लिलि पाण्डे अमरिका में पीएच.डी. करने गई है। उसके पिताजी भारत में एक विश्वविद्यालय के उप–कुलपति है। वह अमरिका में अकेली रहकर कॉलेज में अध्यापन का कार्य कर रही है। उसका ना कोई बॉयफ्रेंड है और न ही पति। वह अविवाहित है। लिली पांण्डे के जीवन में तब तुफान आता है, जब उसे ब्रेस्ट कॅन्सर होने का पता चलता है।

ब्रेस्ट कॅन्सर का मतलब है– जीवन की कुरूपता और अनिश्चितता। उसे मृत्यु से डर नहीं है। ब्रेस्ट कॅन्सर के ऑपरेशन में मरीज की जो बुरी हालत होती है, इसका उसे डर है। लिली ने अपनी पडोसी तथा मित्र फिलिस टेट की कॅन्सर से हुई बुरी हालत देखी है। कॅन्सर की कीमोथेरेपी में बालों का झडना, भौहों का जाना, नाखुन गिरना आदि शारीरिक कुरूपता को देखा है।

लिली का सौभाग्य यह है कि, उसका कॅन्सर पहले स्टेप पर है। अब केवल उसके उरोजों को काटकर निकाला जाएगा। लेकिन फिर भी जीवन की अनिश्चितता बनी रहेंगी। छाती पर उरोजों की जगह रहेंगी केवल आडी–तिरछी रेखाएँ।

लिली पाण्डे कॅन्सर के ऑपरेशन के बाद भारत में गोवा घूमने आयी। गोवा में उसकी पहचान रिजोर्ट के मालिक वनराज माली से हुई है। यह वनराज माली उसके पिता की गार्डन सजाने वाले माली का बेटा है। जो लिली से शादी करना चाहता था।

लेकिन लिली अपने जीवन की अपूर्णता और अनिश्चितता के कारण पुरूषों से दूर रहने लगी हैं, वह अपने निराश जीवन को अकेली बिताना चाहती थी। एक दिन लिली जब जले हुए मानवी शरीर को नदी के तट पर देखती है, तो सोचने लगती है कि– अगर जीवन का यही अंत है तो मेरा जीवन से भागना व्यर्थ हे। और वह वनमाली से शादी करने को तैयार हो गयी।

प्रस्तुत उपन्यास वर्तमान मानवीय सूक्ष्म–अतिसूक्ष्म भावों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है। लिली की यह पीडा मानवी जीवन का यथार्थ है। प्रत्येक मनुष्य इस पीडा से गुजरता है, मनुष्य का यह स्वभाव है की वह अपने आपको अपुर्ण देखना नहीं चाहता।

वह अपना जीवन पूर्ण बनाकर जीना चाहता है, पूरे अवयवों के साथ। व्यक्ति में शारीरिक अपुर्णता से निराशा घेरने लगती है। वह निराश होकर बिखरने, टुटने लगता है। अगर उस वक्त उसे कोई साथ देनेवाला, उसको समझने वाला न हो तो उसकी निराशा और अधिक गहरी हो जाती है,

''मुझे अब किसी के लिए कुछ नहीं करना है। मैं एक ऐसी जगह पहुँच गई हूँ, जिसमें केवल एक तरल अँधेरा है जिसमें दिल की खट–खट कानो में कर्कष रूप से गुँज रही है। मेरे मुँह मे कसैला–कसैलापन भर गया है और आँखे एकदम सुखी और जल रही है। जैसे मुठीभर राख किसीने उनमें झोंक दी हो''[–1]

शरीर की अपुर्णता मनुष्य जीवन में अँधेरा भर देती है। मनुष्य अपने जीवन को टुकडे–टुकडे कर जीता है। शरीर के अवयवों के बिना मनुष्य जीवन की सम्पुर्णता संभव नहीं है

''मेरे लिए मेरे बाल और ब्रेस्ट मेरी सम्पुर्णता के लिए बहुत आवश्यक है– उनके बिना मैं बदसुरत और अधुरी हो जाऊँगी''[–2]

लिली पाण्डे की यह अधुरेपन की पीडा वर्तमान मनुष्य की पीडा है।

कॅन्सर के ऑपरेशन के बाद लिली पाण्डे अपने आपको अपुर्ण पाती रही। वह नारी के पुर्णत्व के लिए और सुंदरता के लिए उरोंजों का होना अत्यंत आवश्यक समझती है। नारी जीवन का पुर्णत्व वह नारी अवयवों के पुर्णत्व में खोजने लगती है। उरोंजों के बिना वह स्वयं को सौदर्यहित समझती रही। और इसी मानसिकता ने उसके जीवन मं निराशा, बेचैनी उदासी का निर्माण किया। यही उदासी जो अवयव की अपुर्णता से शुरू हुई है वह लिली को अपने जीवन के अपुर्णता तक पहुँचाती रही। लिली चाहकर भी शादी से इन्कार करती रही। वह अपने अपुर्ण

***हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय, उदगीर, लातूर**

जीवन को पुरा करने का सोच भी नही सकती। उसे पता है, अपना जीवन अनिश्चित है। कब मृत्यु आए कहा नही जा सकता। वह केवल जी रही है, अपुर्ण बनकर। यही अपुर्णता उसके जीवन का सच बनी है। लिली का यह सफर अवयव की अपुर्णता सफर है। और इस सच से प्रत्येक मनुष्य कभी न कभी अवश्य गुजरता है। लिली अपने अपुर्ण, निराश, उदास, अनिश्चित जीवन को जी रही है। गोवा में जिस होटल में वह ठहरी है, उस होटल का मालिक वनराजमाली उससे शादी करना चाहता था। लिली के माँ की भी यही इच्छा है कि, वह वनमाली से शादी करें। लेकिन अपुर्णत्व और अनिश्चितता में फँसी लिली इसका विरोध करती रही। उसका मन उसे इस बात के लिए तयार नहीं करता। एक दिन जब उसने जलती लाशों को देखा तो उसके जीवन में परिवर्तन आ गया। वह सोचने लगी,

''कोई लहर, दूसरी लहर की तरह नहीं होती, पानी क्षण–क्षण बदलता रहता हैं अपने प्रवाह में, कोई भी वैसी की वैसी नही रहती। परिवर्तन तो जीवन का क्रम ही है।''–3

जीवन और खूशियों से डरनेवाली लिली मृत्यु का एहसास करने के बाद बदल गयी–

''जब हर मानव भारीर का एकही अंत है, तो मरने से इतना डर क्यों? यह भी जीवन यात्रा का अंत मात्र है। पर इस यात्रा को खुश रहकर संपन्न करना चाहिए।''–4

और फिर शुरू हुईं, अपुर्णत्व से पुर्णत्व को पाने की यात्रा और इच्छा।.... और जीवन का निष्कर्ष भी–

''जीवन और मृत्यु का निरंतर प्रवाह यही तो है, जीवन का निष्कर्ष यदी पुनर्जन्म हो तो भी और यदि इस भौतिक शरीर का यही अंत है तो भी, यदी एक विस्तृत संदर्भ में विकल्प यही है कि, कोई विकल्प नही तो वह भी सही''–5

'भया कबीर उदास' यह उपन्यास शरीर की अपुर्णत्व से निर्मित मन की अपुर्णता की ओर जाने का .....जीवन की अपुर्णता से पुर्णता की ओर आने का सफर है।

इस सफर को उषा प्रियंवदा ने स्त्री मन के गलियारों से होते हुए यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। स्त्री मन के गलियारों से गुजरता यह उनका सफर जीवन के सार्थक स्टेशन पर पहुँचता है। मानवीय सूक्ष्म संवेदनाओं को पकडकर मनुष्य मन के एक अपरिचित सत्य का उद्घाटन उषा प्रियंवदा ने प्रस्तुत उपन्यास में किया है।

लेखिका अपुर्णत्व की मानवीय समस्या को अभिव्यक्त करने में भी सफल हुई है, और उसका सार्थक समाधान देने में भी।

संदर्भ ग्रंथ

1. भया कबीर दास–उषा प्रियंवदा पृष्ठ 36, 2. वही, पृष्ठ 40 3. वही, पृष्ठ 122, 4. वही, पृष्ठ 179, 5. वही, पृष्ठ 180